The Banyan Tree Journal
(An Open Access Peer-reviewed Multidisciplinary Journal)
ISSN:
No. 1, June 2025 : 103-106

गुरु का महत्व - कबीर दर्शन में

डॉ. रंजना शर्मा*

मनुष्य का जीवन प्रारंभ ही होता है गुरू के सानिध्य से। प्रथम गुरू मां से प्रारंभ जीवन ज्ञान प्रदान करने वाले, जीवन को सही दिशा में ले जाने वाले गुरू के सानिध्य से पूर्णता प्राप्त करता है। इसीलिए प्रारंभ मे आश्रम व्यवस्था के तहत् ब्रह्मचर्य का जीवन गुरू के आश्रम में, गुरू के सानिध्य मे, आकार ग्रहण करता था। जहां केवल मौखिक अक्षर ज्ञान ही प्राप्त नही होता था, बल्कि गुरू के आचरण, व्यवहार के साथ निरंतर चौबिस घंटे साथ में होने पर, पूर्णता के साथ जीवन निरूपित होने की ओर अग्रसर होता था। प्रारंभ का एक चौथाई जीवन गुरू के निरंतर सान्निध्य में निर्मित होता था। जीवन को गढ़ने वाला गुरू होता था जो बिल्कुल कुम्हार की तरह जीवन का, व्यक्तित्व का, निर्माण करता था। कुम्हार का एक हाथ जैसे पात्र के अंदर से उसे सहारा देता है व दूसरा हाथ बाहर से आकार प्रदान करता है (कभी कभी आघात के द्वारा भी) उसी प्रकार गुरू भी प्रेम का मजबूत सहारा देते हुए सुधार का, निर्माण का, अनुशासन का, कड़ा प्रहार भी करता है तब जीवन सही आकार मे आ पाता है। जीवन को सही आकार देने वाला गुरू इसीलिए वन्दनीय है क्योंकि पूरा जीवन उसके दिये आकार के अनुसार ही संचालित होता है।

''स्कंद पुराण'' के गुरूगीता अध्यान के ''गुरू स्त्रोतम'' में कहा गया है-

गुरूर्ब्रह्मा गुरूर्विष्णु:, गुरूर्देवो महेश्वर:।
गुरू: साक्षात् परं ब्रह्म तस्मै श्री गुरूवे नम:।।

गुरू ही ब्रह्मा है, गुरू ही विष्णु है और गुरू ही भगवान शंकर है। गुरू ही साक्षात् पर ब्रह्म है उन गुरू को नमन है।

लेकिन कबीर दास गुरू को केवल परम ब्रह्म, ईश्वर ही नहीं मानते बल्कि गुरू को, उसके स्थान को, ब्रह्म, ईश्वर से भी ऊपर मानते हैं। वह कहते है -

गुरू - गोविंद दोउ खड़े, काके लागूँ पाँय।
बलिहारी, गुरू आपने, गोविंद दियो बताय।।

अगर हमारे सामने ईश्वर और गुरू दोनों खड़े हैं तो पहले हम किसका चरण स्पर्श करेंगे? कबीरदास जी इसका सीधा जवाब देते हुए कहते है कि सबसे पहले गुरू का चरण स्पर्श करेंगे क्योंकि ईश्वर तक जाने का मार्ग, ईश्वर के बारे में ज्ञान प्रदान करने का काम गुरू करता है, गुरू ही

* विभागाध्यक्ष, दर्शन शास्त्र विभाग, दुर्गा महाविद्यालय, रायपुर (छत्तीसगढ़)। ई-मेल- email-sharmaranjana3061@gmail.com

ईश्वर-ज्ञान प्रदान करता है। अत: सर्वप्रथम गुरू ही वंदनीय है।

गुरू इसलिए भी परम वंदनीय है क्योंकि मनुष्य को देवत्व तक पहुँचाने का काम गुरू ही करता है। गुरू का निरंतर अनंत प्रयत्न ही मनुष्य को देवत्व की श्रेणी तक पहुंचाता है।

बलिहारी गुरू आपनो, घड़ी-घड़ी सौ - सौ बार।

मानु''य से देवत किया, करत न लागी बार।।

इसीलिए कबीरदास कहते हैं कि वह अपने गुरू को अपना प्रत्येक पल, प्रत्येक क्षण सौंप देंगे, पूरा समय उन पर न्यौछावर कर देंगे क्योंकि उन्होने अपना बहुमूल्य समय लगाकर उन्हे मनुष्य से देवता बनाया है।

कबीरदास जी कहते है कि अगर मनुष्य से ईश्वर नाराज हो जाता है, रूठ जाता है तो मनुष्य के पास यह रास्ता है कि वह गुरू की शरण में जाये और उनके बताये मार्ग का अनुसरण करके अपनी गलतियों को सुधारकर ईश्वर को प्रसन्न कर सकता है किंतु यदि गुरू रूठ जाये तो फिर कोई रास्ता नहीं है, कोई ज्ञान प्रदान करने वाला कोई सही रास्ता बताने वाला नहीं हैं और जब ज्ञान ही नहीं होगा तो सुधार कैसे होगा, विकास कैसे होगा, उन्नयन कैसे होगा, इसलिए गुरू को नाराज नहीं करना चाहिए, वही भवसागर से पार लगाने वाला है। अत: गुरू को न समझने वाले अंधा है, विवेकशून्य, ज्ञानशून्य है-

कबीरा ते नर अंध है, गुरू को कहते और।
हरि रूठे ठौर है, गुरू रूठे नहीं ठौर।।

कबीर दास कहते है कि शीश समर्पण करके भी यदि गुरू व उनकी कृपा मिल जाती है तो ये अहो भाग्य है क्योंकि मनुष्य का यह शरीर तो अवगुण से भरा हुआ है, विष की बेल के समान है। समस्त दुर्गुण भाव, दुर्गुण कर्म इस शरीर द्वारा ही होते हैं। अत: इससे मुक्ति गुरू द्वारा ही संभव है क्योंकि गुरू अमृत की खान है, गुणों की खान है, ज्ञान की ज्योति व ज्ञान का प्रकाश पुंज है, दूसरों को सही दिशा देने वाला है। कबीर कहते है-

यह तन विष की बेलरी, गुरू अमृत की खान।
शीश दियो जो गुरू मिले, तो भी सस्ता जान।।

कबीर दास जी कहते है कि जिस प्रकार किसी योद्धा के शरीर में यदि भाल (लोहे) का कोई टुकड़ा, टूटी हुई नोख, गड़ जाये तो उसे बाहर निकालने के लिए चुंबक का इस्तेंमाल करना आवश्यक हो जाता है उसी प्रकार मनुष्य के अंदर विद्यमान बुराई, अवगुण गुरू के ज्ञान रूपी चुबंक से ही बाहर निकलता है, और मनुष्य अवगुण के कष्ट से मुक्त होकर ज्ञान का स्वास्थ्य-लाभ प्राप्त करता है -

अटकी भाल शरीर में, तीर रहा है टूट।
चुंबक बिना निकले नहीं कोटि पटन को फूट।।

बिना गुरू ज्ञान के जीवन से अवगुणों का निष्कासन नहीं होता, जीवन गुणों से युक्त नहीं होता। गुरू ही भगवान है, वहीं भगवान के रूप में मनुष्य के अंदर निवास करता है। उसका साक्षात्कार मनु"य को ज्ञान के द्वारा करवाता हैं। गुरू व उसके ज्ञान के अतिरिक्त बाकी सब पाखण्ड, दिखावा व आडंबर है -

राम रहे बन भीतरे गुरू की पूजा ना आस।
रहे कबीर पाखण्ड सब, झूठे सदा निरास।।

कबीर दास जी कहते है-

तीरथ गये ते एक फल, संत मिले फल-चार।
सतगुरू मिले अनेक फल कहे कबीर विचार।

प्रत्येक मनुष्य को उसके कर्म का फल मिलता है, कर्म के फल का भोग निश्चित है। बहुत विचार, बहुत अनुभव के बाद कबीर दास यह कहते है कि तीर्थयात्रा करने पर यदि मनुष्य को एक फल की प्राप्ति होती है तो संत साधु महात्मा मिलने पर चार फल प्राप्त होते है किंतु सतगुरू के मिलने पर, उसके अनुसार चलने पर, उसके ज्ञान को आत्मसात् करने पर, अनेक फल प्राप्त होते है। मनुष्य सतगुरू के सानिध्य मे अनेक अच्छे कर्म करता है और अनेक अच्छे फलों को प्राप्त करता है। जीवन मे यदि सतगुरू मिल जाए तो मनुष्य को अन्य किसी की भी अवश्यकता नहीं है।

गुरू ही मनुष्य को जीवन का सार समझाता है, जीवन के सत्य से परिचित कराता है, उसके मूल स्वरूप का बोध कराता है। आत्मा, परमात्मा से जुड़े सारे रहस्यों को समझाता है। जैसे लहर दरिया में समा जाती है उसी प्रकार मनुष्य भी शरीर से परे परम तत्व ईश्वर में समा जाता है -

कहना था सो कह दिया, सब कछु कहा न जाय।
एक गया सो जा रहा, दरिया लहर समाय।।

चूंकि गुरू ही ज्ञान प्रदान करता है, गुरू ही जीवन के सत्य से परिचित कराता है, जीवन कैसे जीना चाहिए गुरू ही बताता है, जीव क्या है, ईश्वर क्या है, संसार क्या है, सबका संबंध क्या है, यह सब गुरू ही बताता है अत: गुरू की समस्त महिमा का वर्णन करना मनुष्य के लिए संभव नहीं है -

सब धरती कागद करूं, लेखनी सब वनराय।
सात समुद्र की मसि करूं, गुरू गुन लिखा न जाय।।

अगर सात समुद्र के जल को स्माही बना लिया जाय और समस्त वन के समस्त वृक्षों को, लकड़ी को लेखनी बना लिया जाय और सम्पूर्ण पृथ्वी को कागज बना लिया जाय तो भी गुरू के समस्त गुणों को लिखना संभव नहीं हो पायेगा। गुरू अनंत गुणों से युक्त है, उसका बखान भौतिक साधनों से करना संभव नहीं है। गुरू के गुणों को जीवन में अपनाकर ही उनको हम शत् शत् नमन कर अपने जीवन को सार्थक बना सकते है और भव सागर से पार हो सकते है। अत: गुरू को शत् शत् नमन।

संदर्भित पुस्तकें

1. कबीर-हजारी प्रसाद द्विवेदी
2. कबीर बीजक
3. कबीर वाणी
4. कबीर वाणी- अली सरदार जाफरी